P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-10* January- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

मधु कंवर सोनी
प्राचार्या,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
माँ सरस्वती बी. एड. कॉलेज,
झालामंड, जोधपुर

नरेन्द्र पुरोहित
प्राचार्य,
विभाग लिखें–––––––
खेतेश्वर शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय,
नान्दड़ी, जोधपुर

सारांश

शिक्षा वह साधन है जिसमें मनुष्य सामान्य से विशिष्ट बनता है। प्रत्येक समाज का विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा के द्वारा ही बालकों में नैतिकता आर्दश आध्यात्मिकता का विकास, संस्कृति हस्तान्तरण एवं संवर्द्धन एक पीढ़ी से दूसरी पीढी में होता है। मानव के वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, लौकिक तथा पारलौकिक सभी प्रकार की उन्नति का विधान भारतीय संस्कृति में निहित है। विद्यार्थी जो भारत के भावी नागरिक बनकर धर्म और संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण करेंगे। इस शोध के द्वारा हम यह जानना चाहेगें कि अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृति के प्रति या मनोवृति कितनी है ?

मुख्य शब्द : धार्मिकता, भारतीय संस्कृति।

प्रस्तावना

शिक्षा वह साधन है जिसमें मनुष्य सामान्य से विशिष्ट बनता है। शिक्षा द्वारा मनुष्य अपने जीवन की मूलप्रवृत्तियों को ग्रहण करता है। प्रत्येक समाज का विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक सामाजिक, नैतिक विकास संभव है। शिक्षा के द्वारा ही बालकों में नैतिकता आर्दश आध्यात्मिकता का विकास, हस्तान्तरण एवं संवर्द्धन एक पीढी से दूसरी पीढ़ी में होता है। शैक्षिक स्तर पर धर्य का अर्थ नैतिक शिक्षा से है ना कि रूढ़िगत धार्मिक विचारों से। धर्म से मानव में नम्रता, दया, सहनशीलता, परोपकार, सदाचार आदि गुण विकसित होते है। भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। धार्मिकता का अर्थ किसी धर्म में आस्था विश्वास से है। धर्म का अर्थ – कर्मकाण्ड व क्रियाकलाप न होकर सामाजिक शैक्षिक क्षेत्रों में धर्म की प्रधानता थी। धर्म आत्मा के विकास और ज्ञान का साधन है जिसका अनुसरण करके ही सुध और शान्ति मिल सकती है। व्यक्ति धर्म को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

भारतीय संस्कृति में ''धारणान् धारतये इति धर्म'' माना गया अर्थात विभिन्न भूमिकाओं में कर्तव्यों का पालन करना धर्माचरण माना गया है। इस प्रकार धर्म प्राचीनकाल से ही भारतीय जन जीवन एवं संस्कृति का प्राण रहा है। संस्कृति शब्द का मूल अर्थ है शुद्धि, सुधार या परिष्कृत करना। इस अर्थ में जिसका जीवन परिष्कृत है आचार व्यवहार शुद्ध है वही सभ्य और सुसंस्कृत कहा जायेगा।

संस्कृति के अन्तर्गत उस समाज के जिसमें मनुष्य रहता है – रीति रिवाज परम्पराएं, खान–पान, रहन– सहन, कला विज्ञान, धर्म नैतिकता, विश्वास, त्यौहार आदि आ जाते है। भारतीय संस्कृति में ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' को सर्वोपरि माना गया है। भारतीय संस्कृति को एक महासमुद्र माना गया है। जिसमें अनेक संस्कृतियों की सरिताएं आकर मिली है। प्राचीनकाल से अनेक देशों के लोग हमारी और आकृष्ट होते रहे है, सभी ने अपना अपना प्रभाव यहॉ छोडा है। भारत देश की संस्कृति एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें अनेक रंगो और विविध सुगन्ध के फूल सजे हुए है वास्तव में सामाजिक, आर्थिक, लौकिक, वैयक्तिक, पारलौकिक सभी प्रकार की उन्नति का विधान भारतीय संस्कृति में निहित है।

यदि अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की बात करें जो कि भारत के भावी नागरिक बनकर धर्म और संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण करेंगे तब हम यह जानना चाहेंगे कि अंगेजी एवं हिन्दी माध्यम माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृति या धार्मिकता के प्रति मनोवृति है या नहीं ? यह जानने के लिये शोधार्थी ने अपना शोध कार्य – हिन्दी एवं अग्रेंजी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृति का अध्ययन समस्या को लेकर किया।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या

धार्मिकता

धार्मिकता शब्द धर्म से बना हुआ है, धर्म शब्द संस्कृत की ''धृ'' धातु से बना है जिसका अर्थ है धारण करना इसलिये धर्म का अर्थ होता है जो धारण किया जाये अर्थात् वे विचार, कर्म, प्रत्यय तथा आचार व्यवहार जो समान की संस्कृति के तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में योग्य हो, मान्य हो, उन्हें अपनाना उनको जीवन में स्थान देता था उन्हें धारण करना।

धर्म के मूल को धारण करने वाला धार्मिक तथा उस धार्मिक के आचार व्यवहार तथा क्रियाकलाप व दर्शन को धार्मिकता कहेगें जो अपने शुद्व स्वरूप में सत्य, विचार, कर्म, आचार– व्यवहार अपनी समाज संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में होगी, जो हमें प्रेम, सहानुभूति, दया, सहिष्णुता, परोपकार और परिवेश के योग्य एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य होना।

भारतीय संस्कृति

''संस्कृति'' शब्द 'कृ' धातु में 'सम' उपसर्ग और 'क्तिन' प्रत्यय लगाने से बना है। जिसका मूल अर्थ है – शुद्व या परिष्कृत करना। संस्कृति में परिमार्जन एवं परिष्कार के अतिरिक्त शिष्टता का भाव भी विद्यमान रहता है। भारत देश, पौराणिक व ऐतिहासिक संस्कृतियों के प्राचीनतम केन्द्रो में से एक महान केन्द्र है। जिसमें भारतीय संस्कृति ने विभिन्न संस्कृतियों के श्रेष्ठ तत्वों को सदैव ग्रहण किया। भारतीय संस्कृति, सत्य, अहिंसा, यस्तेय, धार्मिकता, दया, सहानुभूति, परोपकार जैसे मानवीय गुणों पर बल देती है। भारतीय संस्कृति स्वार्थ, द्वेष, वैमनस्य तथा हिंसा से पीड़ित मानवता के लिये आशा की एक किरण है।

समस्या अभिकथन

'प्रस्तुत शोध का समस्या कथन इस प्रकार है–''अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।''

समस्या का औचित्य

समस्या के औचित्य से तात्पर्य उसकी उपयोगिता से है कि हमने जिस समस्या को चुना है, उसका क्या महत्त्व है? भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही धर्म की प्रधानता रही है। धर्म मनुष्य को प्रेम, दया, परोपकार, सहानुभूति, मानव कल्याण के कार्य करने तथा संमार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करता है तथा संस्कृति व्यक्ति समाज और देश के लिये अत्यन्त उपयोगी होती है। भारतीय संस्कृति मानव में अच्छे संस्कारों का विकास करती है। मानव के वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, लौकिक तथा पारलौकिक सभी प्रकार की उन्नति का विधान भारतीय संस्कृति में निहित है। विद्यार्थी जो भारत के भावी नागरिक बनकर धर्म और संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण करेंगे। अतः इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ''अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।'' समस्या का चयन किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता का अध्ययन करना।
2. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता का अध्ययन करना।
3. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना।
5. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना।
6. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई –

1. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श

राजस्थान में 32 जिले है इनमें से शोधार्थी ने पाली जिले का चयन किया। पाली शहर के एक अंग्रेजी विद्यालय व एक हिन्दी विद्यालय का चयन किया गया।

समस्या का परिसीमन

इस शोध को पाली जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया। इस शोध हेतु कुल 50 विद्यार्थियों का चयन (जिसमें से 25 विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम से एवं 25 विद्यार्थी हिन्दी माध्यम से) सोद्देश्य यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध अध्ययन में शोधार्थी ने ''अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।'' हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है–

1. एल. आई. भूषण द्वारा निर्मित धार्मिकता मापनी (प्रमापीकृत उपकरण)
2. भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति मापने हेतु स्वनिर्मित मापनी (अप्रमापीकृत उपकरण)

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकी तकनीक मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी परीक्षण द्वारा किया गया।

साहित्यावलोकन

अब्दुल तनवीर (2009) – ने ''कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति

का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति में अन्तर है। कला वर्ग के विद्यार्थियों में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृति अधिक पायी गयी।

श्रीमती चंद्रकान्ता शर्मा (2010) – ने ''वर्तमान परिस्थितियों में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली व माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के सैकेण्डरी पाठ्यक्रम में धर्म निरपेक्ष शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया। इन्होनें अपने शोध कार्य में पाया कि दोनों पाठ्यक्रम में '' धर्म निरपेक्ष ' शिक्षा को सामाजिक विज्ञान विषय की पाठय पुस्तक में सम्मिलित किया गया है। पाठ्यक्रमों में समझाने का प्रयास किया गया है कि राज्य का अपना कोई धर्म नहीं है तथा सरकार सभी धर्मो के प्रति एक समान व्यवहार रखती है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली पाठ्यक्रम में राजस्थान के सदर्भ में कोई भी विषयवस्तु सम्मिलित नहीं की गई है जबकि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के पाठ्यक्रम में राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत से संबंधित मेले व त्यौहार, विभिन्न कलाओं, लोक देवताओं के बारे में जानकारी दी गई है।

प्रेमलता चौधरी (2011)– ने ''हिन्दी व अग्रेंजी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन' पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने शोध कार्य में पाया कि हिन्दी व अंग्रेंजी वर्ग के विद्यार्थियों की धार्मिकता के प्रति मनोवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

धर्माराम सारण (2014) – ने 'राजस्थान के विभिन्न भौगौलिक क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन '' पर शोध कार्य किया। इन्होनें अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि पहाड़ी व मरूभाग के विद्यार्थियों के धार्मिक, सामाजिक, गणतांत्रिक, सौहर्यात्मक आर्थिक, सुखात्मक शक्ति व स्वास्थ्य मूल्य में कोई अन्तर नहीं पाया गया लेकिन पहाड़ी भाग के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया।

निधि (2016) – ने "अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की धार्मिकता के प्रति मनोवृत्ति एवं उनके व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन" पर शोध कार्य किया। इन्होने अपने निष्कर्ष में पाया कि अनुसमचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान अनुसूचित जनजाति की अपेक्षा अधिक प्राप्त हुआ। अतः अनुसूचित जनजाति की तुलना में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की धार्मिकता के प्रति मनोवृत्ति अधिक पायी गयी।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन निष्कर्ष में दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया परन्तु अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में अनुसूचित जनजाति की अपेक्षा अधिक मूल्य पाये गये।

प्रस्तुत शोध का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या–1

अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता के प्राप्तांकों से प्राप्त मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रांतिक अनुपात

क्र. सं.	समूह	समूह संख्या (N)	मध्यमान M	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता (.05 विश्वास स्तर पर)
1	अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी	25	71.6	10.21	.19	असार्थक
2.	हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी	25	72.4	10.29		

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 का अवलोकन करने पर अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 71.6 तथा 72.04 प्राप्त हुआ इसी प्रकार प्रमाप विचलन क्रमशः 10.21 एवं 10.29 प्राप्त हुआ। दोनों समूह में धार्मिकता से संबंधित अंतर की सार्थकता जाँचने हेतु ज्ञात किया गया क्रांतिक अनुपात (Vh) -19 प्राप्त हुआ जो कि .05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारणी मान 1.96 से कम है। अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता मापनी के अंकों का मध्यमान हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ अतः अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता का स्तर हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ।

सारणी संख्या–2

अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति के प्राप्तांकों से प्राप्त मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रांतिक अनुपात

क्र.सं.	समूह	समूह संख्या (N)	मध्यमान M	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता (.05 विश्वास स्तर पर)
1	अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी	25	72.79	7.94	1.94	असार्थक
2	हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी	25	79.65	4.99		

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 का अवलोकन करने पर अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति मापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 72.79 तथा 79.65 प्राप्त हुआ इसी प्रकार प्रमाप विचलन क्रमशः 7.94 एवं 4.99 प्राप्त हुआ। दोनों समूह में भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति से संबंधित अंतर की

सार्थकता जाँचने हेतु ज्ञात किया गया क्रांतिक अनुपात (Vh)1-94 प्राप्त हुआ जो कि .05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारणी मान 1.96 से कम है। अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति के अंकों का मध्यमान हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ अतः अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति का स्तर हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम प्राप्त हुआ।

परिकल्पना से संबंधित निष्कर्ष

परिकल्पना संख्या – 1

अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर ज्ञात हुआ कि अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की धार्मिकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना संख्या – 2

अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर ज्ञात हुआ कि अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल रामनारायण व आस्थाना विपिन (1985) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।*
2. *भार्गव, महेश : ''आधुनिक मनोविज्ञान, शिक्षण व मापन'' आगरा : एच.पी. भार्गव : बुक हाउस।*
3. *दुबे, उमेश चन्द्र : ''श्री अरविन्द का संस्कृति दर्शन'' नई दिल्ली : भारतीय विद्या प्रकाशन।*
4. *जायसवाल, सीताराम : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' लखनऊ : डालीगंज रेलवे क्रॉसिंग सीतापुरा रोड।*
5. *कपिल, एच.के. (1979) :''अनुसंधान विधियां'' आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।*
6. *मुखर्जी, रविन्द्रनाथ (1993) : ''भारतीय समाज व संस्कृति'' दिल्ली : विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर।*
7. *शर्मा, चन्द्रधर : ''भरतीय दर्शन'' दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स।*
8. *शर्मा, आर. ए. (1998) : ''शिक्षा अनुसंधान'' मेरठ : इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।*
9. *सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2003) : ''शिक्षा के दार्शनिक व समाज शास्त्रीय सिद्धांत'' मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।*
10. *सरीन शशिकला और सरीन : ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियां'' आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।*